

हके : श्री अंकाश गंप्रती. पूर्वाटतवसवनी. राजा प्रजावसकरणी
नरहे.
चुको
नर
॥१॥
॥५॥

गोगि
लवंग
नोडेडा
वार
वरमा
माइकी

चठभ्रवानी. पटखोहा: ईश्वरी सर्वदुःखिसरी ईश्वरमाहा
देव. गोरपार्वता की दुहाइ. वीरवेतालमैरवकी दुहाइ:
कोवरुको माक्षाते नाजोगी नी की दुहाइ: ईश्वरकी वीवा:
॥३॥ मुखमिसों. तेलमिसों मिसों दुज्जनलोग: मोरामाथे
सरस्वती को उकटारी वंदमाता तोहि. जैसे वछाडराम
लक्ष्मण को तेसे वछावाहिये मोहि. कोवरुका माक्षा नयना
जोगी नी की दुहाइ: ॥४॥ मैं मोहन जगमोहन मोहन मेरो नाउ
मितचितरुपुकोरों मोह सकलेगा उस कलसभा के चितो हंसि
वासन वेठेरां निमो हुताता तिताटि पुराति नुवसे अकास मोर
मुद्गवपाताल जो आवेमात्र मात्र कर्ते तेकरा मुंडे पत्रथर्के.
जो आवेप्रा उषा उकते सेत मोरे प्राधान परते. पुरमंत्र इत्य
रकिवावा: ॥५॥ ॐ कोमिनि कोमसेरिके मको मकराकरा:
रुमारुमारु: अंका नाम स्वाहा: प्रति आकर्षन: ॥६॥ शुभम्:

三
二
一

मा
के
७
५
॥
न
र

५८